हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

प्रश्नपत्र **समय 10 मिनट**

इतिहास का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। भूतकाल में हुई घटनाओं से सबक लेकर हम अपने वर्तमान और भविष्य को संवारते हैं। यही कारण है कि स्कूली ज्ञान में इसे एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। लेकिन आज तक इस विषय को कभी वह अहमियत नहीं दी गई जो उसे मिलनी चाहिए थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि इतिहास हमारे युवा वर्ग के दृष्टिकोण को नए साँचे में ढालने में बड़ी भूमिका निभाता है। परन्तु कुछ ऐसे कारण हैं, जो समाज और शिक्षा के क्षेत्र में इतिहास की महत्ता को स्थापित करने में अवरोध पैदा करते हैं।

भारत में इतिहास का पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें हमेशा से ही राजनीतिक विवाद का विषय रही हैं। इस मामले में भारत ही अकेला देश नहीं है। लगभग हर देश में इतिहास की प्रस्तुति और उसे स्कूली शिक्षा में पढ़ाए जाने को लेकर विवाद होते रहे हैं। उदाहरण के लिए देखें, तो अमेरिका के लिए हिरोशिमा पर बम गिराना, और ब्रिटेन के लिए स्कूली शिक्षा में गाँधी की चर्चा करना हमेशा ही असुविधाजनक रहा है।

स्कूली पाठ्यपुस्तकों में परोसे गए इतिहास को लेकर विवाद होने का मुख्य कारण उसका सामूहिक स्मृतियों और पहचान को धारण करना है। पाठ्य पुस्तकें तो सरकार की आधिकारिक दस्तावेज समझी जाती हैं। इन्हें सरकार की शक्ति के साथ जोड़कर देखा जाता है। साथ ही ये बच्चों के मन-मस्तिष्क पर भी छाप छोड़ जाती हैं। स्कूली स्तर पर प्रस्तुत किए गए अतीत के एक निश्चित संस्करण से बच्चों को एक स्वभाव प्राप्त होता है, जिसे भविष्य में राजनीतिक रूप से संगठित किया जा सकता है।

पाठ्य पुस्तकों में प्रस्तुत सामग्री को दोष देने के समय लोग यह भूल जाते हैं कि वास्तव में यह दोष पाठ्यक्रम बनाने वालों का होता है। इस समस्या से निपटने के लिए सन् 2006 में एनसीईआरटी ने इतिहास के पाठ्यक्रम को इतिहासकारों की एक टीम से तैयार करवाया। यह पाठ्यक्रम और सामग्री इतिहास को एक लंबी कहानी के रूप में न कहकर, बच्चों को हमारे पूर्व जीवन के अनेक पक्षों जैसे किसानों का जीवन, महिलाओं, कला आदि की स्थितियों के बारे में खोजबीन करने की उत्सुकता जागृत करता है। ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में अभिलेख या उत्खनन से प्राप्त सामग्री के चित्र प्रकाशित किए गए हैं।